

2735  
I

184  
Prudakriya



१२ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 आद्योपनिषदासाह ॥ द्वापाहो नमो ॥ पातासु नमो ॥ सुखा  
 र्चः प्रपूजागार्ध ॥ अथ महादानाकार्यकार्य ॥ यानपि नमो ॥  
 मानसकास्य पत्रवतुः ॥ अमरुतामधस्य कृतासाहो वृहत्  
 संपादिकामनाथं अमरुतामहाहयनाथं ॥ प्रियुतासु नमो  
 नित्यः कृतसंज्ञानवृद्धं ॥ अमरुतामहाहयनिवासाथं  
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अमरुतामधस्य कृतासाहो वृहत्  
 नाचनः कृतसंज्ञानवृद्धं ॥ आद्योपनिषदासाह ॥ सुखा  
 नमो ॥ कृतसंज्ञानवृद्धं ॥ पुनर्धनमो ॥ पाद्योपागार्धनमो ॥  
 धृक् नमो ॥ श्रीगुरुभ्यो नमो ॥ अमरुतामहाहयनिवासाथं  
 अमरुतामहाहयनिवासाथं ॥ अमरुतामहाहयनिवासाथं  
 स्वानवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



श्री

वृत्तपुष्प प्रदीपिका

यस्वाहा॥ वृषास्वाहा॥ बृहस्पतिस्वाहा॥ शुक्रास्वाहा॥  
 अनीश्वरास्वाहा॥ कारुवास्वाहा॥ मरुवास्वाहा॥ ॥  
 पूजायास्वाहा॥ श्रीगुरुदेवतामुक्ताचतुनमः॥ उक्तं चारुय  
 श्रीगुरुदेवतामुक्ताचतुनमः॥ **स्वाहा**॥ श्रीगुरुदेव  
 यजुमाजीकापुष्पात्तमः॥ **स्वाहा**॥ उक्तं चारुय  
 स्वपायीमहाशुक्तिः नमो जीसर्वपापविघ्नहर्त्रः पुनमासि

ॐ नमः कृती वरुणाय

दिव्यकृतं॥ ॥ प्रीतिकर्मयायाग कृतयमस्तु क्रिधायक॥

हानः हानावृत्तं चतुनमः॥ उक्तं चारुय

हस्तार्थकाय॥ श्रीगुरुदेवतामुक्ताचतुनमः॥ पुनर्धन

मः उक्तं चतुनमः॥ उक्तं चारुय

थनपुस्तकसंस्कृतयाया॥ उक्तं चारुय

या॥ उक्तं चारुय















हिस्वक ॥ थन अहिस्वक काय ॥ ॐ अहिस्वकं महावज्रं  
दि ॥ ॐ सर्वं कन्य ॥ ॐ पुनिं वी वृत्तादि ॥ ॥ थन ची हात  
धीयं कन्य ॥ ॐ नमो गवने वी च न पु ह के रु उ अ  
य न थ ग नाया है न सं म्प क सं वृ ध म यः न य थ ॥ ॐ  
मृ न र ग म्प मृ न स्वा हा ॥ ॐ नी या क ॥ ॐ नी य  
नार्थ न य क ॥ ॥ श्री धर्म धनु वा रा श्व तः पंच स मा हा  
वै ग व र्ण य व ना र द्या ल क् ष पा दार्थ पु नि के स्वा हा ॥ ॥

स्वान वा य ॥ ॐ आ र्थ वे यो च ना य स्वा हा ॥ ॐ आ र्थ वा य  
स्वा हा ॥ ॐ ल सं र वा य स्वा हा ॥ ॐ मि ना हा य स्वा हा ॥ ॐ  
मा य सि ध य स्वा हा ॥ ॐ नी ची हा द न य ॥ ॐ न वा य  
स्वा हा ॥ ॐ रु द्वा य स्वा हा ॥ ॐ या य स्वा हा ॥ ॐ म्वा य स्वा  
हा ॥ ॐ पि ता य स्वा हा ॥ ॐ च र म्मा ना य व त्र पू र्ण पु नी  
के स्वा हा ॥ ॐ ग व य स या न ॥ ॐ स व र्ण य स्वा हा ॥ ॐ नी  
र द्वा य स्वा हा ॥ ॐ न र द्वा य स्वा हा ॥ ॐ न द य स्वा हा ॥







श्रीश्री श्री .

श्रीश्री श्रीश्रीश्री

श्रीश्रीश्रीश्रीश्री

श्रीश्री

2735 I



मवर्तुमहाकाशः वेगमनयमहचंद्र सर्वसंप्रगिदायने॥ **आख**  
**मनकयक॥** उं मनीरमहामूनखाहा॥ **आखिलेखनालय॥** उं अथ  
यिसानत्रनसंवरूपसिद्धिबल॥ **थनकूसुपुत्रीनयक॥** उं रुनी  
**नंदकायक॥** उं सुपुत्रीकाशाननं गायवाक॥ **अथः महायानकाह**  
यथापूर्ववाधीसत्त्व्यादि॥ **अंमगधायक॥** उं समतत्रमानस्यः पु  
विगांसहः यथानामनः कृगपुत्रीकापुपुनित्तिनी॥ **पिगांसहः** य  
थानामनकृगपुत्रिकापुपुनित्तिनी॥ **पिगांसहः** यथानामनः

कृसपुत्रिकापुपुनित्तिनी॥ **थनः कृगाहामाः** किथिलेखनीयक  
पुविगांसहः पिगांसहः स्वपीकाः नामननः पुत्रिकापुपुनित्तिनी  
थनकूसुपुत्रीनयक॥ **साइदुः यंचामगनीय॥** उं समितायसपुनित्तिनी  
धृसदुष्टस्य स्वधाम॥ **कंकनीरवाचनीभाचनीः** उंचनीरपुनी  
हमकृयकनी स्वधाम॥ **लीखवियक॥** उं पुन्यरमहपुन्यः ग्यादी  
**सीकलीगी॥** क॥ चंद्रचंद्रदानपावसी॥ **गापुत्रामघासमृदुहेनन**  
समयस्वधाम॥ **कंकनीरवाचनीयक॥** उं कंकनीरवाचनीयक॥



मापूजा मया समुद्र रुते नैः समय स्वध ॥ **ममकाजी**  
**उक्त्या** ॥ उं नंगवाक पुष्प संकृं हंगवाक मर्थ वच ॥ विचीगु  
 पुष्पं कृत्ति पाहमी मापूजा मया समुद्र रुते नैः समय ॥ **ओ**  
**वडीः सीसा रुतः श्रीः ममवीय वा उथी ॥ मायहा ॥ वाक ॥**  
 पाऊयान पाहामि मापूजा मया समुद्र रुते नैः समय स्वध ॥  
**धनगा मुयाया ॥ उं नृकृत्ति गुमहा वा नृकृत्ति नवदा**

मिहं ॥ **ममवीय ॥ उं मूर्नी ॥ मम मूर्नी त्वाहा ॥ धनकाजी ॥**  
**स्वचाकल ॥ उं नृकृत्ति गुमहा वा नृकृत्ति नवदा ॥**  
**मिधोय रुत ॥ ॥ धनपा ॥ कृत्ति गुमहा वा नृकृत्ति नवदा ॥**  
 यथ पूर्वचा धिस त्वग्यादी ॥ **ममवीय ॥ ममवीय ॥**  
 नत्यः पुचीगा मरु ॥ पिगा मरु ॥ स्वपीगा ॥ नाम नन नृकृत्ति सोम न  
 यत्किगा ॥ कृत्ति गुमहा वा नृकृत्ति नवदा ॥ **ममवीय ॥ उं नृकृत्ति गुमहा**  
 गुमहा गुमहा स्वध ॥ **ममवीय ॥ ममवीय ॥**



स्वीजय ॥ सुपूष्यं स्वध ॥ सुपाङ्क गे स्वध ॥ साहागं साहाव  
 याया ॥ अधीयगुपागुल स्वध ॥ यनपि कजानकः कुरु माहाव  
 नः कालवाङ्क ॥ यथपुर्वधाधीसुत्वादि ॥ असमगधाय  
 क ॥ असमगजमानस्यः अयेपुर्वीतांमहयेथनामननः मस्मेयी  
 क स्वध ॥ पितामह स्वपितायथनामनः मस्मेयी सुग स्वध ॥  
 स्वाचीर्धनयक ॥ सुपूष्यं स्वध ॥ यनपि कुरु वनायाक ॥ पिन्दुल  
 वं स्वध ॥ स्वीकृता ॥ यनगिर्यं सचवीयक ॥ साद्रुद्रः पंचासतः सच

वा

वीयक ॥ वाङ्क ॥ यनपि कुरु लीक ॥ कुरु स्वध ॥ तंजयाङ्कः हीग  
 याङ्कः कोवङ्कः सिसाहस ॥ धुः सगः मायः वाङ्क ॥ कुरुयाय ॥  
 धुः धर्माचक्रं पुर्वकः नैधमगुरुकं जगत्सर्वमधनः सर्वदुर्गी ॥  
 नमयानिर्गयगयातीधपुनदवासायोनूतः ॥ धिर्भूतवर्ककस  
 त्वं पुनं पुनस्मसिह ॥ अक्रतविय ॥ सिसाहसधायकाय ॥ यथादि  
 ॥ न्यादि ॥ यनडहलीखडासाहागधकाय ॥ यनवीकुरुकनकः अथ  
 कालवाङ्क ॥ यथपुर्वधाधीसुत्वादि ॥ असमगधायक ॥



असुतं कुरुमानस्य ॥ इयं वासि नूक सजाता ॥ अपुण्य च वांधवा  
 कामगोर्वा विप्रा च द्रुता द्रुता समसः ॥ तस्यैव वा दह न्यते नः ॥  
 पिता योपका गतीः ॥ सुखाय संस्था धनायः ॥ कनका कुर्यात् सुविक्रय  
 यः ॥ स्वातादि स्वातपि कचः ॥ कंकदि कंकपि कचः ॥ गहमे विकलपे  
 सुखधाम ॥ **स्वीनय ॥ सुपुष्प स्वधाम ॥ गीर्थं स्वदीया ॥ विकलाय**  
**निधुमं स्वधामी ॥ यो देवं स्वधाम ॥ लाडुः ॥ यो नारायणः ॥ स्वदीयाय**  
**वाकं ॥ उध्वं ॥ सिधुलं ॥ कंकका ॥ गंगवाकः ॥ राजवाकः ॥ धौवडीः ॥ सीसा**

**हस्तः ॥ श्रीमहाः ॥ नायः ॥ वाकं ॥ उध्वं ॥ गुरु ॥ इयं कला मिपु महाधामा ॥**  
**मिक्ला चो गवनी गरीः ॥ मिक्ला जनव सानी ॥ गः ॥ स्वर्ध पुन मासी**  
**हं ॥ श्रावण ॥ इंसु नेश महासुन स्वाहा ॥ सिहा ॥ ह्यथा यहाय ॥**  
**यथा धिमान् न्यादि ॥ धन साहासिक ॥ धन मिपु ज्ञाय ॥ धन**  
**मं कलथी लक ॥ क्क सुसिद्धं ली क ॥ इंसु गंध च नु नम ॥ कलुयी**  
**च नु मम ॥ पल्य स्वां उध्वं ॥ लस्वी च्छाय ॥ स्वां च्छाय ॥ पक्ष्म पल्य पुष्पं न**







भावाः नैव संभावाः नृनृगपागुपेनया ॥ **कपलाहाकपुय ॥ पुडा**  
**याय ॥ श्रीस्वाकाय ॥** स्वगसूगधरामिपुष्पिनम ॥ **धनकसायन**  
**याय ॥ कसंधन ॥** धर्मधनसूखावगिगसनः पंचवसागु ॥  
 वेश्वरसूखावगिगसनः ॥ **पिंकसूखावगिगसन ॥** विकृत्य  
 सूखावगिगसनः ॥ **धनकाक ॥** वशपुपुमाननः ॥ **पिंकदद्यागया**  
 शयः ॥ **उद्धमसफरुभगनीः** कलमसुगजसगस ॥ **हामनेः साहाम**  
**सीक ॥ मगसुनी ॥ मीसुनीनयक ॥** उंचलेरमेहाजलेकगगिसाग

वीनासायः सूगनीसार्गचदयिग ॥ **पीनय ॥** संखधनधयक  
**वाक ॥** उंचदिऊयावही ॥ **रुमोहायगिरुनः** कलधमगुनीनीक  
 लासगकैन्नयकीनाहिसुख ॥ **म ॥** ॥ **स्वसिवाक ॥ श्रीगुय**  
 यागकाकिगनक ॥ **कपलापाकैयकैयकै** नखचकैयसपलाक  
 कैक ॥ **पिंकचुयक ॥** गिंपीकैयाससाफुगुह ॥ ॥ ॥  
 ससग १०३ ॥ **मिहायुमासकसूयक** रुमिसुगुवातधखुदुया  
 दिनसथापासकैयसीरुयादिनकृतः वृवाहालयाः वरुवाय